डॉ. हरीसिंह गौर

एक प्रेरक व्यक्तित्व

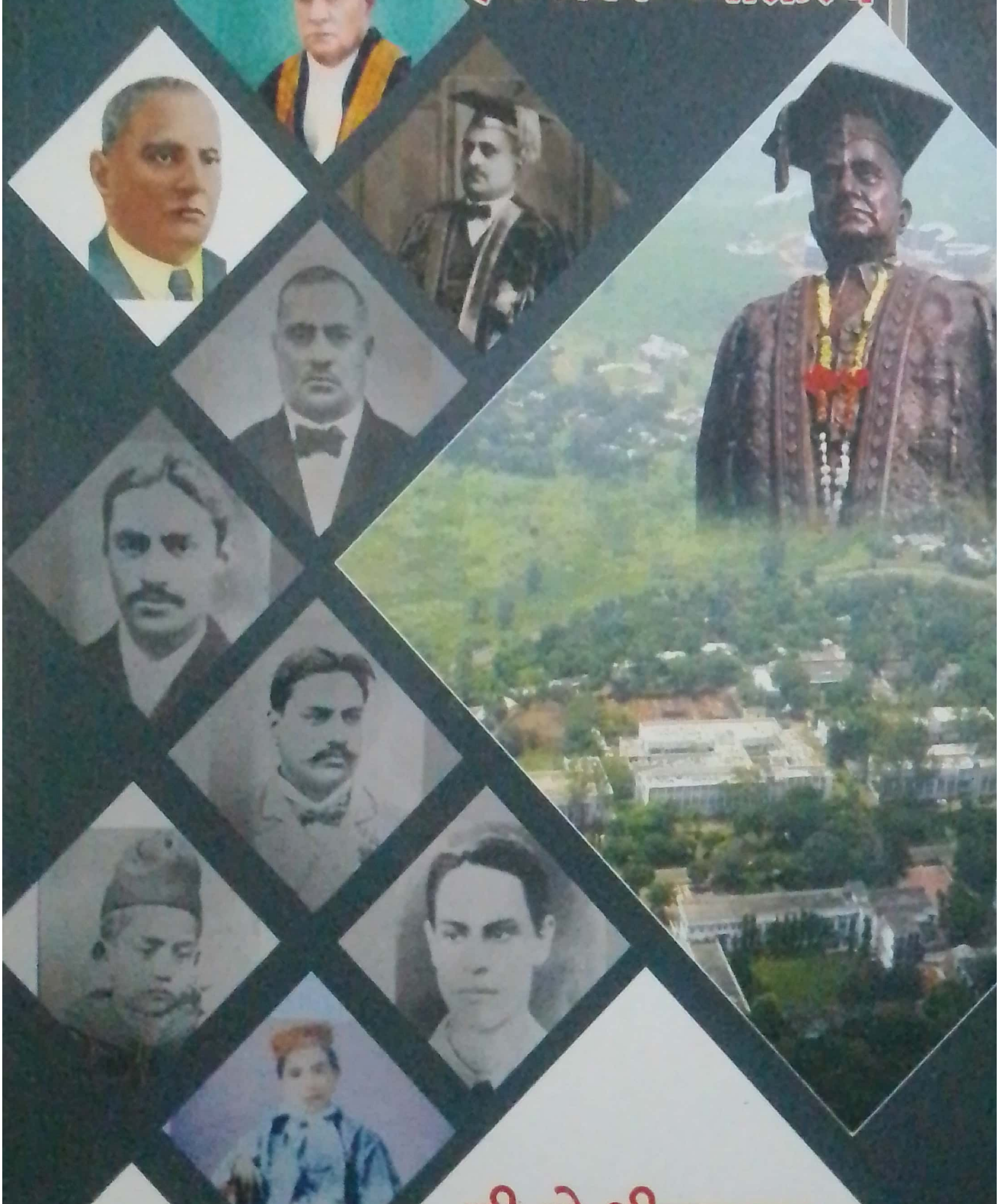

बी.के श्रीवास्तव

Scanned with OKEN Scanner

Cataloging in Publication Data — DK
[Courtesy: D.K. Agencies (P) Ltd. <docinfo@dkagencies.com>]

Śrivāstava, Brajeśa Kumāra, 1968- author.
Ḍô. Harīsiṃha Gaura – Eka preraka vayaktitva / Ḍô. Brajeśa Kumāra Śrīvāstava.
pages cm
In Hindi.
On the life and works of Sir Hari Singh Gour, 1869-1949, lawyer, founder and ex vice-chancellor of Sagar University, Madhya Pradesh, India.
Includes bibliographical references.
ISBN 9788124610930 (सजिल्द)

1. Gour, Hari Singh, Sir, 1869-1949. 2. Lawyers – India – Biography. 3. Educators India – Biography. I. Title.

LCC KNS110.G68S65 2021 | DDC 340.092 23

ISBN: 978-81-246-1093-0 (सजिल्द)
ISBN: 978-81-246-1084-8 (अजिल्द)

© लेखक – ब्रजेश कुमार श्रीवास्तव

प्रथम प्रकाशन वर्ष, 2021

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी अंश या पूरे का प्रतिलिपिकरण, ऐसे यन्त्र में भण्डारण जिससे इसे पुनः प्राप्त किया जा सकता हो या स्थानान्तरण (किसी भी रूप में या किसी भी विधि जैसे इलेक्ट्रॉनिक, यान्त्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या किसी अन्य तरीके से) कॉपीराइट धारक एवं प्रकाशक की पूर्वलिखित अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता।

मुद्रक एवं प्रकाशक –
डी.के. प्रिंटवर्ल्ड (प्रा.) लि.
पंजीकृत कार्यालय : "वेदश्री", एफ-395, सुदर्शन पार्क
मेट्रो स्टेशन : ई.एस.आइ हॉस्पिटल, नई दिल्ली - 110015
दूरभाष : (011) 25453975, 25466019
ई-मेल : indology@dkprintworld.com
वेब : www.dkprintworld.com

Scanned with OKEN Scanner

विषय-सूची

पुरोवाक्	v
प्रसंगवश	vii
भूमिका	ix
1. जन्मभूमि सागर : एक परिचय	1
2. जन्म एवं परिवार	7
3. देश–विदेश में शिक्षा	31
4. भारत में नौकरी	53
5. प्रख्यात वकील के रूप में ख्याति	61
6. प्रख्यात लेखक के रूप में ख्याति	73
7. आत्मकथा : क्यों, कैसे व कौन लिखे	93
8. राजनीतिक क्षेत्र में भूमिका	101
9. दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्थापक वाइस–चांसलर एवं एक प्रबुद्ध शिक्षा–शास्त्री	119
10. सागर विश्वविद्यालय की स्थापना	123
11. महिलाओं की स्थिति में सुधार एवं समाज–सुधारक के रूप में योगदान	135
12. धार्मिक दृष्टिकोण एवं बौद्ध धर्म	147
13. विभिन्न देशों के लोगों के चरित्र के बारे में विचार	163
14. डॉ॰ हरीसिंह गौर के बारे में प्रख्यात विद्वानों के विचार	181
• भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ॰ राजेन्द्र प्रसाद (1884–1963)	181
• भारत के द्वितीय राष्ट्रपति डॉ॰ सर्वपल्ली राधाकृष्णन (1888–1975)	182
• पं॰ गोविन्दवल्लभ पंत (1887–1961)	184
• पं॰ कुञ्जीलाल दुबे (1896–1970)	185

Scanned with OKEN Scanner

• हुँमायू कबीर (1906–69) 186
• मगन भाई देसाई (1889–1969) 187
• आचार्य शिवपूजन सहाय (1893–1963) 188
• बाबू वृन्दावन लाल वर्मा (1889–1969) 189
• प्रो॰ रामप्रसाद त्रिपाठी 190
• पं॰ द्वारका प्रसाद मिश्र (1901–88) 192
• शिवकुमार श्रीवास्तव (1928–2007) 194
• अम्बिका प्रसाद बाजपेयी 195
• महाराज कुमार डॉ॰ रघुवीर सिंह (1908–91) 197
• राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त (1886–1964) 198
• प्रो॰ आर॰एस॰ सैनी (1925–2012) 199
• एस॰ए॰ राघो (1925–2009) 200
• एम॰बी॰ मल्होत्रा 202
• प्रो॰ कान्ति कुमार जैन 202
• राजेश केशरवानी 204
• राजेश श्रीवास्तव 204

15. जीवन-दर्शन एवं अन्तिम यात्रा 209

डॉ॰ हरीसिंह गौर से सम्बन्धित कुछ छाया-चित्र 223

अन्त में......................... 229

सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची 231

Scanned with OKEN Scanner

अनन्यतम त्याग भावना के स्वामी, जनकल्याण की गहरी सोच के धनी, अतुलनीय सत्यव्रती, उत्कृष्ट शिक्षा-व्रती, विधिवेत्ता, न्यायविद्, समाज-सुधारक, साहित्यकार, दार्शनिक, देशभक्त जैसे अनन्य प्रेरणा के स्रोत हमारे आदर्श विद्वान् सर हरीसिंह गौर के जीवन-चरित्र का करिश्मा आज पचासियों और हरीसिंह गौर खड़े कर देने की सामर्थ्य रखता था और ऐसा किया भी जा सकता था यदि उनके व्यक्तित्व और कृतित्व को पूरी समग्रता के साथ जन-जन तक पहुँचाने का काम नियोजित ढंग से और पूर्ण इच्छा-शक्ति के साथ किया गया होता। प्रोफेसर ब्रजेश श्रीवास्तव की इस पुस्तक को मैं इस बड़े काम का ही एक हिस्सा मानता हूँ।

ऐसे अद्वितीय जीवन-चरित्र को नियोजित तरीकों से बार-बार, सिलसिलेवार ढंग से बच्चों और जीवन-दृष्टि तैयार करते नौजवानों के दिलो-दिमाग में बसाया जाना चाहिए ताकि उनके जैसा बनने का भाव बढ़ते बच्चों के मन में गहराई से जाग सके।

— **गोविन्द नामदेव**
सिने अभिनेता, मुम्बई

ब्रजेश कुमार जी ने अपनी इस पुस्तक में डॉ॰ गौर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के महत्त्वपूर्ण पहलुओं को समेटने का प्रयास किया है। वैसे तो डॉ॰ गौर का पूरा जीवन ही एक किताब है जिसके हर पन्ने से कुछ-ना-कुछ सीखने को मिलता है। उनका देशप्रेम उनके सामाजिक कार्यों में झलकता है, लेकिन उनका अपने गृहनगर के प्रति लगाव अपने आप में निश्चित ही सराहनीय एवं प्रेरणादायक है। इस पुस्तक में जो लिखा गया है वो बहुत ही करिश्माई है। मुझे लगता है कि निश्चित ही यह पुस्तक हर आयु वर्ग के लिए प्रेरणास्पद है। अगर मैं इस पुस्तक को एक फिल्म निर्देशक की नज़र से देखूँ तो इसमें वह सब कुछ है जो कि एक अच्छी फ़िल्म के लिए ज़रूरी होता है।

सभी विद्यार्थियों, शोधार्थियों, शिक्षक बन्धुओं एवं आम जनता से मेरा अनुरोध है कि डॉ॰ हरीसिंह गौर पर लिखी गई इस पुस्तक को पढ़कर इसमें अन्तर्निहित सांस्कृतिक मूल्यों को आत्मसात् करने का प्रयास करें।

— **सौरभ श्रीवास्तव**
फिल्म निर्देशक, मुम्बई

डॉ॰ बी॰के॰ श्रीवास्तव, का जन्म 2 मई 1968 को हुआ था। उनकी इतिहास विषय पर 45 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। विभिन्न शोध पत्रिकाओं एवं सम्पादित पुस्तकों में उनके 105 से अधिक शोध आलेख प्रकाशित हो चुके हैं। 100 से अधिक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शोध संगोष्ठियों एवं सम्मेलनों में उन्होंने अपने शोध-पत्र प्रस्तुत किए हैं। आपने संस्कृतिपरक मूल्य संस्थापना शिविर के अलावा चार राष्ट्रीय शोध संगोष्ठियों एवं दो अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों का सफलतापूर्वक आयोजन किया है। वे वर्तमान में मध्यप्रदेश इतिहास परिषद् के अध्यक्ष हैं, और वर्तमान में आप डॉ॰ हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर के इतिहास विभाग में प्रोफेसर एवं अध्यक्ष के साथ-साथ प्रौढ़ शिक्षा विभाग में प्रभारी-अध्यक्ष के रूप में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। 10 शोध-छात्र उनके मार्गदर्शन में पीएच.डी॰ उपाधि प्राप्त कर चुके हैं एवं 8 शोध-छात्र शोधरत हैं।

DKPW

₹ 280

978-81-246-1084-8
9788124610848

Scanned with OKEN Scanner